CBSE Test Paper 03

Ch-11 हरिवंश राय बच्चन

1. अग्नि पथ कविता में वृक्ष किसका बोध कराते हैं?
2. अग्निपथ कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहते हैं?
3. माँग मत, कर शपथ, लथपथ इन शब्दों की पुनरावृत्ति क्यों की गई है? अग्निपथ कविता के आधार पर लिखिए।
4. अग्नि पथ कविता में कवि सुखों को त्यागकर क्या करने की प्रेरणा देता है?
5. पथ पर थम जाने से हम किस लाभ से वंचित रह जाते है? कविता अग्निपथ के आधार पर उत्तर दीजिए।
6. कवि हरिवंश राय बच्चन मनुष्य से किस बात की शपथ लेने को कह रहे हैं?
7. अग्नि पथ कविता थके-हारे निराश मन को उत्साह एवं प्रेरणा से भर देती है। स्पष्ट कीजिए।
8. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

    i. चल रहा मनुष्य है
    अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ।

    ii. यह महान दृश्य है
    चह रहा है मनुष्य
    अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ!
    अग्निपथ! अग्निपथ! अग्निपथ!

CBSE Test Paper 03
Ch-11 हरिवंश राय बच्चन
Answer

1. वृक्ष सुखों का बोध कराते हैं। जो सुख-सुविधाएँ हमें दूसरों से मिलती हैं, जिनकी छाया में हम विश्राम करते हैं, जिनमें अपने जीवन के सुख ढूँढ़ते हैं।
2. कवि यह सन्देश देना चाहते हैं कि हमें जीवन-पथ पर सँभलकर चलना है, अपनी मंज़िल तक पहुँचना है। क्योंकि जीवन संघर्षों तथा चुनौतियों से भरा हुआ है, इसमें सुख की कामना तथा विश्राम लक्ष्य प्राप्ति में बाधक है।
3. शब्दों की पुनरावृत्ति करके कवि कर्मठ व्यक्तियों को जीवन-पथ की कठिनाइयों से जूझने के लिए दृढ़ करके तैयार करना चाहता है।
4. कवि सुखों को त्यागकर जीवन की चुनौतियों को स्वीकारने की प्रेरणा देते हुए कहता है कि यह जीवन कठिनाइयों एवं संघर्षों से भरा हुआ है। यह जीवन अग्नि पथ के समान है।
5. यह जीवन पथ अग्निपथ के समान संघर्षों, कष्टों, बाधाओं से भरा हुआ है। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमें निरंतर आगे बढ़ते रहना चाहिए। जो इस पथ की बाधाओं से घबराकर बीच में ही थम जाते हैं वे अपना लक्ष्य (मंजिल) प्राप्त नहीं कर पाते।
6. कवि जानता है कि जीवनपथ दुख और कठिनाइयों से भरा है। व्यक्ति इन कठिनाइयों से जूझते हुए थक जाता है। वह निराश होकर संघर्ष करना बंद कर देता है। अधिक निराश होने पर वह आगे बढ़ने का विचार त्यागकर वापस लौटना चाहता है। कवि संघर्ष करते लोगों से कभी न थकने, कभी न रुकने और कभी वापस न लौटने की शपथ को कह रहा है।
7. मनुष्य का जीवन संघर्षों से भरा है। उसके जीवन पथ को कठिनाइयाँ एवं विघ्न-बाधाएँ और भी कठिन बना देती हैं। मनुष्य इनसे संघर्ष करते-करते थककर निराश हो जाता है। ऐसे थके-हारे और निराश मन को प्रेरणा और नई ऊर्जा की आवश्यकता होती है। यह कविता मनुष्य को संघर्ष करने की प्रेरणा ही नहीं देती है, वरन् जीवन पथ में मिलने वाली छाया देखकर न रुकने, सुख की कामना न करने तथा कठिनाइयों से हार न मानने का संदेश देती है। इसके अलावा इस कविता से हमें पसीने से लथपथ होने पर भी बढ़ते जाने के लिए प्रेरणा मिलती है। इससे स्पष्ट है कि अग्नि पथ कविता थके-हारे मन को उत्साह एवं प्रेरणा से भर देती है।
8. i. इन पंक्तियों का भाव यह है कि मनुष्य का आगे की ओर चले जाना ही अपने आप में एक विशेष बात हैं। संघर्ष-पथ पर चलने में व्यक्ति को कई बार आँसू बहाने पड़ते हैं। थकने पर वह पसीने से तर-बतर हो जाता है और शक्ति का व्यय करना भी पड़ता है। वह लथपथ हो जाता है। इस स्थिति से न घबराकर निरंतर आगे बढ़ते जाना ही जीवन का लक्ष्य है।
   ii. कवि कहता है कि हे मनुष्य यह संसार अग्नि से पूर्ण मार्ग के समान कठिन है। इस कठिन मार्ग पर सबसे सुन्दर दृश्य यही हो सकता है कि मनुष्य कठिनाइयों का सामना करते हुए निरन्तर चल रहा है। कठिनाइयों का सामना करते हुए उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं, शरीर से पसीना निकल रहा है और खून बह रहा है। फिर भी वह इनकी परवाह किए बिना निरन्तर संघर्ष-पथ पर बढ़ता जा रहा है। सामने कठिनाइयों से पूर्ण मार्ग है, फिर भी मनुष्य को चलते चले जाना है।